डॉ बिपिन कुमार
प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग,
राम रतन सिंह महाविद्यालय, मोकामा
पी0 पी0 यू0, पटना।
मो0–9430064013
ईमेल–kbipin29@yahoo.Com

हैरोड–डोमर का विकास मॉडल प्रतिश्ठित विश्लेशण इस सेकल्प पर आधारित है कि आर्थिक प्रणाली पूर्ण रोजगार पर संतुलन की प्राप्ति करती है। "Prof. Keynes" ने यहाँ यह स्पश्ट किया है कि पूर्ण रोजगार स्वचालित रूप से प्राप्त नहीं होता – अर्थात कीन्स का विश्लेशण मुख्यततः अल्पकालिक विश्लेशण था वहीं Keynes के बाद के अर्थशास्त्रियों ने सतत् या निरन्तर विकास की दशाओं का अध्ययन किया है। उन्होंने यह भी स्पश्ट किया है कि ऐसी कौन सी दशाएँ होगी जिसमें लगातार या एतत् विकास की स्थितियाँ मुद्रा स्फीति या मुद्रा अवस्फीति से प्रमाणित हुए बिना प्राप्त की जा सकती है।

अतः दूसरे भाब्दों में यह कहा जा सकता है कि 'हौरोड' और 'डोमर' दोनों ही अर्थशास्त्रियों ने की कीन्स (Keynes) के आय, उत्पादन और रोजगार से संबंधी विचार को अधिक व्यापक एंव दीर्घकालीन रूप में प्रस्तुत किया है। हैरोड और डोमर के मॉडल की व्याख्या अलग–अलग तरीके से होने के बावजूद दोनों ही मॉडल का सार एक ही है। इस कारण दोनों ही मॉडलों का (Harred-Domar Model) का अध्ययन एक साथ ही किया जाता है।

हैरोड–डोमर मॉडल विकास की प्रकिया में निवेश को एक महत्वपूर्ण तत्व मानते है कारण कि निवेश दोहरी भूमिका निभाता है। जहाँ एक तरफ आय का निर्माण होता है– वही दूसरी तरफ पूँजी स्टॉक में वृद्धि करके देश की उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है। निवेश की इस पहली विशेशता को माँग प्रभाव (Effective Demand) और दूसरी को पूर्ति प्रभाव (Supply Effect) कहा जाता है।'हैरोड–डोमर मॉडल के अनुसार, दीर्घकाल में पूँजी रोजगार की स्थिति के बनाये रखने कि लिए खुद निवेश में लगातार वृद्धि की जानी चाहिए। इसके लिए वास्तविक आय में निरन्तर वृद्धि उस दर पर की जानी चाहिए कि बढ़े हुए पूँजी स्टॉक की पूर्ण क्षमता का प्रयोग हो सके।

हैरोड मॉडल

प्रो0 हैरोड ने सतत विकास के लिए आर्थिक विकास मॉडल का प्रतिपादन अपनी पुस्तक 'टुवडस डॉयनमिक इकॉनामी'(Tocoards Dynamic Economices (1939) में दिया। यह मॉडल पूर्ण रोजगार प्राप्त कर चुकी विकसित अर्थव्यवस्थाओं के लिए है। हैरोड मॉडल गुणक और त्वरक के सिद्धांत को समन्वित करके पूर्ण रोजगार बनाये रखने के तरीके की व्याख्या करता है। यह मॉडल निम्नलिखित प्रमुख मान्यताओं पर आधारित है:

1. पूँजी उत्पाद अनुपात तथा श्रम उत्पाद अनुपात को स्थिर माना गया है।
2. आयोजित समस्त बचत का स्तर आय का स्थिर अनुपात है।
3. तकनीकि प्रगति का सम्पूर्ण प्रभाव तटस्थ है।
4. पैमाने का स्थिर प्रतिफल है। और
5. उधमी निवेश की जो इच्छा करते हैं वह उत्पादन में वृद्धि की गति पर निर्भर करता है।

डॉमर मॉडल

'प्रो0 डोमर' ने अपने मॉडल को अपनी पुस्तक "Essays in the Theory of Economic Growth" में प्रतिपादित किया है। डोमर ने भुद्ध निवेश की दोहरी भूमिका का उल्लेख किया है। एक ओर यह उत्पादन क्षमता को बढ़ाता है तो वहीं दूसरी ओर यह आय की उत्पति करता है। डॉमर के अनुसार अर्थव्यवस्था तब संतुलन में कही जाएगी जब इसकी उत्पादन क्षमता राश्ट्रीय आय के बराबर हो जाती है। डोमर मॉडल निम्नलिखित प्रमुख मान्यताओं (धारणाओं) पर आधारित है:

1. आय एक प्रारंभिक पूर्ण रोजगार संतुलन स्तर होता है।
2. इसमें सरकारी हस्तक्षेप का अभाव होता है।
3. इसमें औसत बचत प्रवृति स्थिर होती है।
4. यह मॉडल बन्द अर्थव्यवस्था (Close Economy) में कार्य करते हैं जिसमें विदेश व्यापार नहीं होता।
5. निवेश तथा उत्पादन क्षमता या निर्माण के बीच समायोजन होने में देर नहीं लगती।
6. इसमें सीमान्त बचत प्रवृति स्थिर रहती है।
7. पूँजी गुणांक अर्थात् पूँजी स्टॉक का आय से अनुपात स्थिर मान लिया जाता है।
8. पूँजी वस्तुओं का मूल्य फ्वास नहीं होता क्योंकि उन्हें अनन्त जीवी मान लिया जाता है।
9. बचत तथा निवेश उसी वर्श की आय से संबंध रखते है।
10. सामान्य कीमत स्तर स्थिर रहता है अर्थात् मोद्रिक आय तथा वास्तविक आय समान होती है।

अब आगे हैरोड डोमर मॉडल की तुलना (Comparison of Harrod- Domar Model)

विकसित अर्थव्यवस्था के संबंध में 'हैरोड–डोमर मॉडल लगातार एंवं सतत वृद्धि की आवश्यकताओं का वर्णन करते है। दोनों के मॉडल में पूँजी की महत्वपूर्ण भूमिका है। पूँजी उत्पादन अनुपात में होने पर जब तक बचत की औसत प्रवृति (APS) बचत की सीमान्त प्रवृति (MPS) के बराबर होती है। बचत वो विनियोग की समानता वृद्धि की (साम्य दर) संतुलन दर की दशा को संतुश्ट

Scanned by TapScanner

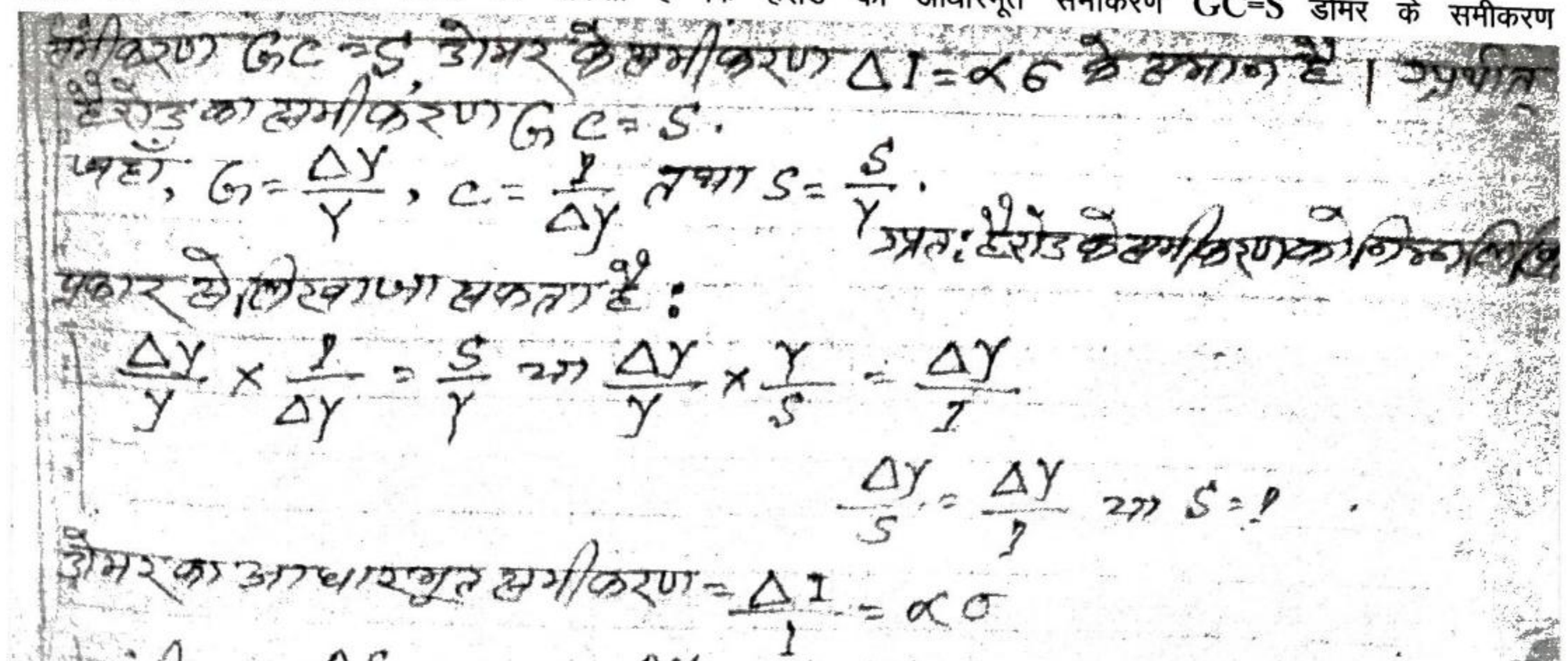

करती है। अतः यह स्पश्ट किया जा सकता है कि हैरोड का आधारभूत समीकरण GC=S डोमर के समीकरण

समीकरण $GC=S$, डोमर के समीकरण $\Delta I = \alpha\sigma$ के समान है। अर्थात् हैरोड का समीकरण $GC = S$.

जहाँ, $G = \frac{\Delta Y}{Y}$, $C = \frac{I}{\Delta Y}$ तथा $S = \frac{S}{Y}$. अतः हैरोड के समीकरण को निम्नलिखित प्रकार से लिखा जा सकता है:

$$\frac{\Delta Y}{Y} \times \frac{I}{\Delta Y} = \frac{S}{Y} \text{ या } \frac{\Delta Y}{Y} \times \frac{Y}{S} = \frac{\Delta Y}{I}$$

$$\frac{\Delta Y}{S} = \frac{\Delta Y}{I} \text{ या } S = I.$$

डोमर का आधारभूत समीकरण $= \frac{\Delta I}{I} = \alpha\sigma$

चूंकि $\alpha = \frac{\Delta S}{\Delta Y}$ तथा $\sigma = \frac{\Delta Y}{I}$

अतः $\Delta I \cdot \frac{1}{\Delta S/\Delta Y} = I \times \frac{\Delta Y}{I}$ या $\frac{\Delta I \times \Delta Y}{\Delta S} = \Delta Y$ या $\Delta I = \Delta S$. अतः स्पष्ट है कि दोनों मॉडलों में अनुवरत वृद्धि की दशाएँ एक समान हैं। यहाँ यह भी प्रदर्शित किया जा सकता है कि हैरोड द्वारा वर्णित वृद्धि की आवश्यक दर G_w, डोमर द्वारा वर्णित वृद्धि की स्थायी दर $\alpha\sigma$ के समान है। इसे इस प्रकार दर्शाया जा सकता है:

$$\alpha = \frac{S}{Y} \text{ या } S = \alpha Y \quad \text{---- (i)}$$

$$\sigma = \frac{\Delta Y}{I} \text{ या } \Delta Y = I\sigma \quad \text{---- (ii)}$$

$$\Delta Y = S\sigma$$

समीकरण (i) से S का मान रखने पर $\Delta Y = \alpha Y \cdot \sigma$ या $\frac{\Delta Y}{Y} = \alpha\sigma$

चूंकि $G_w = \frac{\Delta Y}{Y}$ अतः $G_w = \alpha \cdot \sigma$.

अतः स्पष्ट है कि हैरोड का $G_w = \frac{S}{C_r}$ = डोमर का $\alpha\sigma$

अब हम यहाँ हैरोड–डोमर मॉडल की प्रमुख समानताओं का उल्लेख करेंगे:

1. ये दोनों ही मॉडल लगभग एक जैसी मान्यताओं पर आधारित है।
2. ये दोनों ही मॉडल विकसित अर्थव्यवस्था के पूर्ण रोजगार स्तर पर सतत् विकास दर से संबंधित है।
3. हैरोड–डोमर मॉडल कीन्स की प्रमुख धारणाओं यथा सीमान्त बचत प्रवृति, गुणांक निवेश तथा बचत की समानता आदि का प्रयोग करता हे।
4. दोनो ही मॉडल के अनुसार, पूँजीवादी विकसित अर्थव्यवस्थाएँ निरन्तर सतत् विकास की दर को कायम नहीं रख सकती।
5. दोनों ही मॉडल प्रयोगात्मक (Experinental) संतुलन मार्ग के अनुरूप बनाये गए है।
6. दोनों ही मॉडल पूर्ण रोजगार बनाये रखने की दृश्टि से निवेश में वृद्धि पर जोर दिया गया है।
7. दोनों ही मॉडल में पूर्ण रोजगार पर सतत् विकास की एक ही र्त है अर्थात 'नियोजित बचत–नियोजित निवेश' में। इस अवस्था को प्राप्त करने के लिए निवेश मं होने वाली वृद्धि सीमान्त बचत प्रवृति तथा उत्पादन पूँजी अनुपात की गुणा के बराबर होनी चाहिए।

इसके बाद हैरोड–डोमर मॉडल की प्रमुख असमानतायें इस प्रकार हैं:

1. 'हैरोड और डोमर' ने आय और निवेश में जो संबंध बतलाया है वह एक दूसरे के विपरीत है। हैरोड के अनुसार पहले आय मं वृद्धि होती है। उसके बाद निवे ा में वृद्धि होती है। डोमर के अनुसार, पहले निवेश में वृद्धि होती है उसके बाद आय में वृद्धि होती है।
2. हैरोड ने सीमान्त बचत प्रवृति के लिए (अल्फा) शब्द का प्रयोग किया है, जबकि डोमर ने सिम्मा शब्द का प्रयोग किया है।
3. हैरोड ने अपने विश्लेशण में विकास प्रकिया में उधमियों को प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक तत्वों को जबकि डोमर ने तकनीकी तत्वों को महत्वपूर्ण बतलाया है।
4. हैरोड ने अपने मॉडल मे विकास की तीन दरों का उल्लेख किया है जबकि डोमर ने इसके विपरीत केवल एक ही विकास दर अर्थात् संतुलन विकास दर को बतलाया है।

Scanned by TapScanner

5. डोमर का मॉडल आर्थिक विकास की लिए नियोजित निवेश में वृद्धि करने का सझाव देता है, जबकि हैरोड मॉडल पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में प्रेरित निवेश का समर्थन करता है।
6. डोमर का मॉडल 'गुणांक' सिद्धांत पर आधारित है जबकि हैरोड मॉडल त्वरक के सिद्धांत पर आधारित है।
7. डोमर मॉडल निवेश को आय में वृद्धि से संबंधित करता है जबकि हैरोड मॉडल उस मार्ग को बतलाता है जिसके द्वारा निवेश को आय की दर से जोड़ा जाता है।

उपरोक्त बिन्दुओं को हैरोड–डोमर मॉडल की प्रमुख समानतायें एंव असमानतायें स्पश्ट हो जाती है। अब हम इन दोनों ही मॉडल के (हैरोड–डोमर) के प्रमुख आलोचनाओं का वि लेशण करेंगे:

1. इसके तहत श्रम तथा पूँजी में स्थिर अनुपात की मान्यता सही नहीं है कारण कि श्रम और पूँजी का एक स्थिर अनुपात में प्रयोग किया जाना आवश्यक नहीं है।
2. पूँजी उत्पाद अनुपात स्थिर नहीं है। दीर्घकाल में तकनीकी परिवर्त्तनों के कारण पूँजी उत्पाद अनुपात में परिवर्त्तन आते रहता है।
3. यह मान्यता भी गलत है कि बचत प्रवृति स्थिर रहती है। लोगों की रूचि, आदतें, जीवन स्तर आदि में परिवर्त्तन आते रहता है। इन परिवर्त्तनों के कारण बचत प्रवृति स्थिर नहीं रहती है।
4. इसका प्राकृतिक विकास दर स्थिर नहीं है क्योंकि तकनीकी और संगठनात्मक परिवर्त्तनों के द्वारा श्रम एंव पूँजी की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।
5. हैरोड–डोमर मॉडल के आर्थिक विकास की प्रकिया में सरकार के योगदान की अनदेखी (अवहेलना) करती है। वर्त्तमान समय में सरकार और राजकोशीय नीति के महत्व की अनदेखी (अवहेलना) करने वाला सिंद्धात अधिक व्यावहारिक सिद्ध नहीं हो सकता।

उपरोक्त वि लेशण के आधार पर कमशः हैरोड–डोमार मॉडल, उसकी प्रमुख माद्यन्यतायें, विकास, समानता, असमानता एंव अन्त मं आलोचनाओं का वि लेशण किया गया है।

Scanned by TapScanner